जयप्रकाश नारायण

न्याय के लिए एक सैनिक

क्र. ६९३ | रु. ९०

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ट कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक
पुष्पा भारती	सी. एम. विटणकर	अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-93-9005-559-3
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza,
Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

जयप्रकाश नारायण

११अक्तूबर १९०२, विजयादशमी के दिन, सिताबदियारा * के बाबू हरसुदयाल के घर बधावे बज रहे थे। उनकी पत्नी फूलरानी ने पुत्र को जन्म दिया था। यही बालक आगे चलकर जयप्रकाश नारायण के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
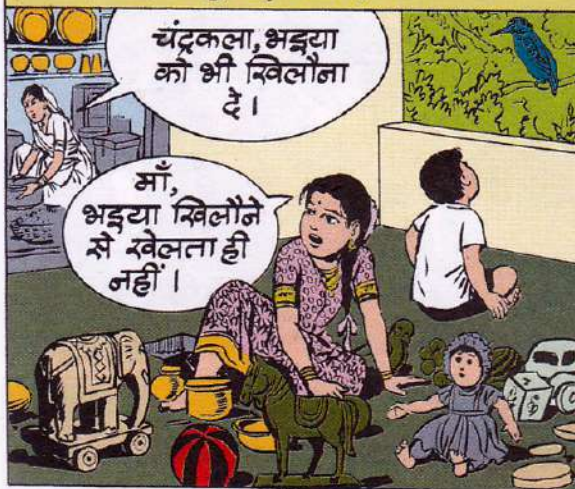
* उत्तर प्रदेश और बिहार की सीमा पर, गंगा-सरयू संगम किनारे बसा गाँव।

उसे बउल क्यों कहते हैं आप? उसके जैसा होशियार बच्चा तो मैंने आज तक नहीं देखा।
सच! आप की कृपा है, मास्टरजी!

शाम को —
बेटा, देखो, तुम्हारे लिये क्या लाये हैं हम!

कबूतर! कितने प्यारे हैं!
इन्हें पाल कर देखो, बड़ा मजा आयेगा।

जो बच्चा कभी खिलौनों से नहीं खेला, कबूतर पाकर खुश हो गया।

पर कुछ दिन बाद, एक कबूतर लू लग कर मर गया।

दुःखी जयप्रकाश से कुछ खाया-पिया नहीं गया...
नहीं अम्मा, मुझे भूख ही नहीं है।

जयप्रकाश को पढ़ने में बहुत रुचि थी। दस वर्ष की उम्र में ही उन्होंने देश-विदेश के कई बहादुर राजाओं की जीवनियाँ पढ़ ली थीं। भगवद्‌गीता भी वे बड़े शौक से पढ़ते थे।

बच्चे की अध्ययन-प्रियता देखकर पिता ने उन्हें बारह वर्ष की उम्र में, आगे पढ़ने के लिए पटना भेज दिया।

पटना में, जयप्रकाश की गणना विद्यालय के सबसे मेधावी छात्रों में होने लगी। गणित उनका सबसे प्रिय विषय था।

जयप्रकाश 'सरस्वती भवन' छात्रावास में रहते थे। एक दिन —
अरे, आज तो रक्षाबंधन है। स्कूल क्यों जा रहे हो?
लेकिन, हैडमास्टर साहब ने तो छुट्टी देने से मना किया है।
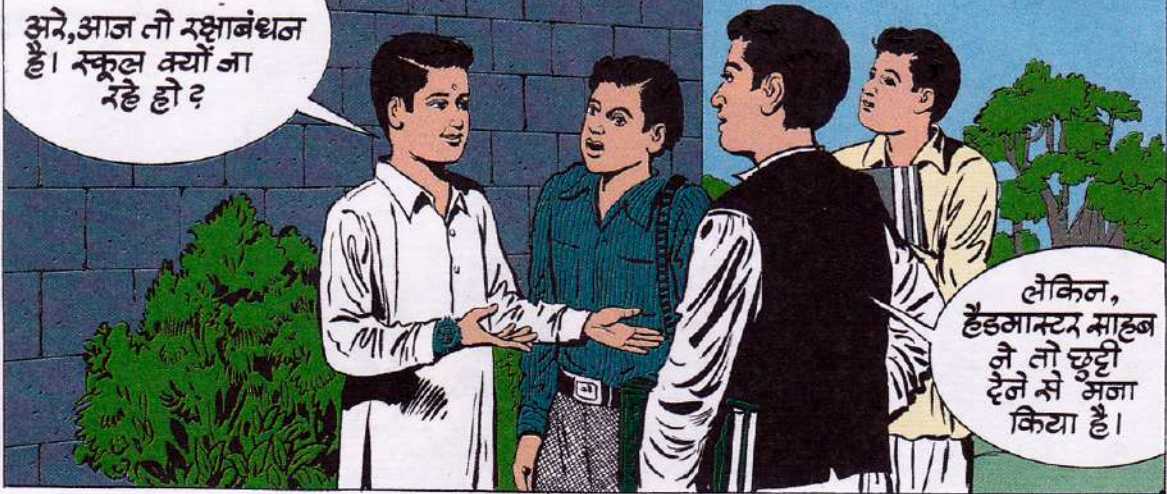
वे तो अंग्रेज हैं। उन्हें हमारे पर्वों का महत्व नहीं मालूम। उनका यह निर्णय हमें स्वीकार नहीं करना चाहिए।

दूसरे दिन, हैडमास्टर मिस्टर व्हिटमोर ने जयप्रकाश को बुलाया।
जयप्रकाश, मैं जानता हूँ कि तुम अच्छे लड़के हो। किंतु अनुशासन भंग करने की सजा तुम्हें मिलनी ही चाहिए।

उनकी हथेली पर सड़ाक, सड़ाक — पाँच बेंत पड़ीं।
दर्द हो रहा है, लेकिन इनकी अनुशासन-प्रियता की मैं इज्जत करता हूँ।

उनका यह छोटा-सा सत्याग्रह व्यर्थ नहीं गया। देश की तत्कालीन राजनीति में रुचि रखने वाले, बड़ी कक्षाओं के अन्य छात्रों का ध्यान जयप्रकाश की ओर गया।
बड़े बहादुर हो दोस्त! मेरा नाम छोटन सिंह है। शाम को मेरे कमरे पर मीटिंग है। आओगे?
जरूर आऊँगा।

छोटन सिंह का कमरा, क्रांतिकारी विद्यार्थियों का अड्डा था।

जयप्रकाश इन मीटिंगों में श्रोता बनकर बराबर जाने लगे।

सत्रह वर्ष की आयु में जयप्रकाश ने प्रथम श्रेणी में मैट्रिक पास किया। उन्हें मैरिट स्कालरशिप भी मिला। इंटर में उन्होंने विज्ञान के विषय लिये।

* अंग्रेज अधिकारी पर बम फेंक कर फाँसी पाने वाला प्रथम क्रांतिकारी।

उनके मस्तिष्क में विज्ञान था, हृदय में साहित्य और निष्ठा गीता में ! खाली घंटे में—

उन्हीं दिनों, अपने बहनोई ब्रजबिहारी सहाय के माध्यम से वे ब्रजकिशोर बाबू और राजेन्द्र प्रसाद जैसे बड़े नेताओं के सम्पर्क में आये।
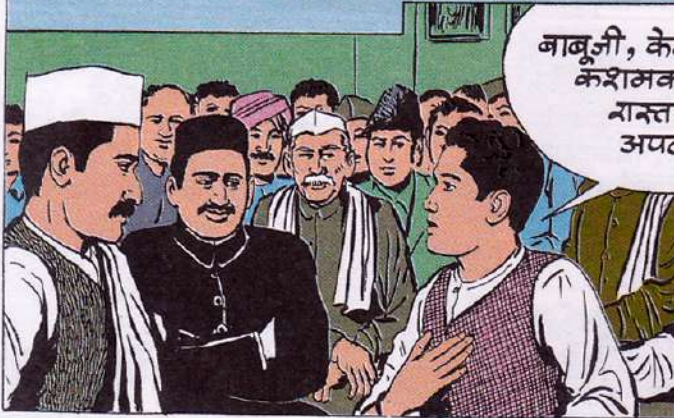
बाबूजी, केवल मैं ही नहीं, पूरा युवावर्ग बड़ी कशमकश में है। खुदीराम बोस का रास्ता ठीक है या गांधीजी का? अपनी-अपनी जगह दोनों ही सही लगते हैं।

और, जून १९२० में चौदह वर्षीया सुशिक्षित कन्या प्रभावती के साथ जयप्रकाश का विवाह हो गया।
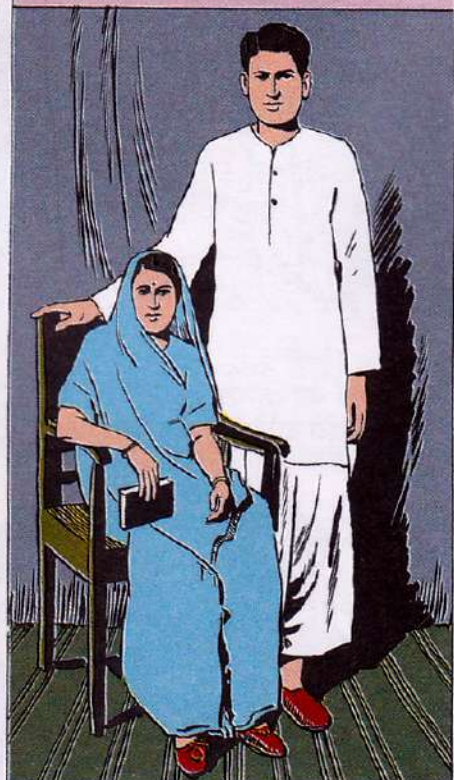
धीरे धीरे, ब्रजकिशोर बाबू* जयप्रकाश से बहुत प्रभावित हो गये।
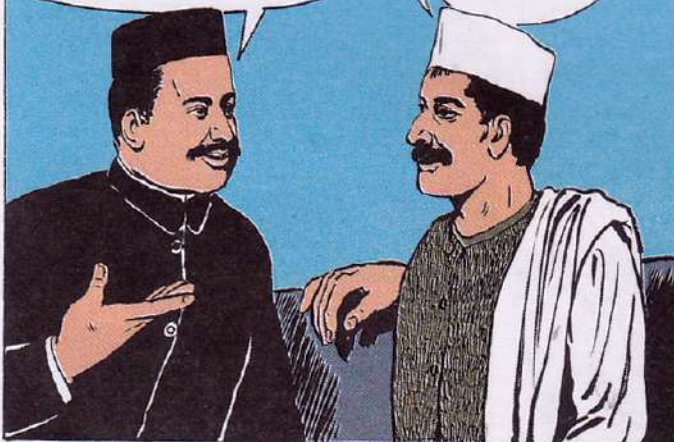
* गांधीजी को चम्पारन की प्रेरणा देनेवाले बिहार के तत्कालीन बड़े नेता।

जनवरी १९२१ इंटरमीजियेट परीक्षा के लिए केवल महीना भर शेष था। तभी—
आज, शाम को मौलाना आजाद और जवाहरलालजी के भाषण होंगे। काश हम सुन पाते!
तो चलो न, ऐसा मौका बार-बार नहीं आता।

मौलाना गजब के वक्ता थे ही।
दोस्तो, गांधीजी का पैगाम आपके लिए लाया हूँ "ये अंग्रेजी स्कूल गुलाम बनाने के कारखाने हैं। इन्हें छोड़ दीजिए।
बिलकुल ठीक! ये अंग्रेज हमें महज क्लर्की ही तो देते हैं।

किंतु, जनता में से कोई बोला—
गांधीजी से कहिए पहले अपने नये स्कूल खोलें, फिर अंग्रेजी स्कूल छुड़वायें।
भाइयो, अमृत नहीं मिलेगा, तो क्या आप जहर पी लेंगे?

मौलाना आजाद की प्रेरणा से जयप्रकाश नारायण तथा अन्य सैकड़ों युवकों ने अंग्रेज सरकार के अनुदान से चलने वाले विद्यालय छोड़ दिये।
हम अब अंग्रेजों द्वारा दिया कोई दान नहीं लेंगे। न नौकरी, न शिक्षा। हमें देश आजाद करना है।

उसी वर्ष जयप्रकाश ने बिहार विद्यापीठ से प्रथम श्रेणी में इंटर पास कर लिया।

बेटा, अब तुम्हें काशी विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी कर लेनी चाहिए।
किंतु, पिता जी, वह तो अंग्रेज सरकार के अनुदान से चलता है।

फिर तो ब्रजकिशोर बाबू की सलाह है कि तुम लंदन पढ़ने चले जाओ।
जिन लोगों ने हमें गुलाम बनाया, उनके देश में जाऊँ? नहीं, पिता जी, ऐसी आज्ञा न दें।

रात में उन्होंने पत्नी को मन की बात बतायी।

प्रभा, पढ़ाई की बाबत मैं काफी सोचता रहा हूँ। सुना है, अमरीका में लड़के खुद कमाते और पढ़ते हैं। वहाँ चला जाऊँ पर, प्रभा, तुम....
मैं कभी आपकी बाधा नहीं बनूँगी। आप अमरीका जाने का प्रबंध कीजिए।

काश! तुम्हें भी साथ ले जा पाता!
मेरी चिंता मत कीजिए। मैं बापू के पास साबरमती आश्रम चली जाऊँगी।

१६ अगस्त, १९२२ को जयप्रकाश ने अमरीका के लिए प्रस्थान किया।
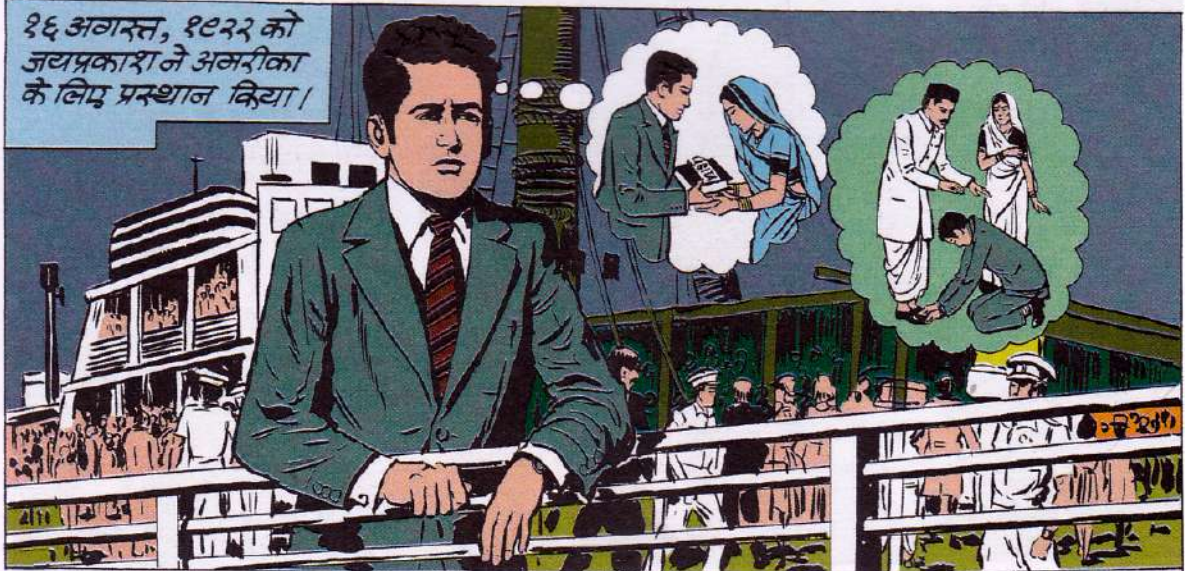
अमरीका में जयप्रकाश ने बर्कले में पढ़ने का निश्चय किया। किंतु विश्वविद्यालय पहुँचने पर—

वे निराश होकर बर्कले के सस्ते आवास नालंदा क्लब में आये जहाँ हिंदुस्तानी साथियों ने उन्हें धीरज बँधाया और सलाह दी—

जयप्रकाश मेरिसाविल चले गये।

एक पठान शेर खाँ उनका मुखिया था। सुन कर बड़ा खुश हुआ।

शेर खाँ ने उन्हें अंगूरों के खेत में काम दिला दिया। वे नौ घंटे रोज काम करते थे। पिछड़े हुए और गरीब लोगों के प्रति प्रेम के बीज उनके मन में यहीं पड़े।

जनवरी में उन्होंने बर्कले विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, और अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया।
यहाँ की पढ़ाई बहुत महँगी है। इयोवा जाना पड़ेगा।
हाँ, सचमुच, वहाँ की फीस तो काफी कम है।

वे इयोवा में एक वर्ष रहे। वहाँ पढ़ाई के साथ जीविकोपार्जन के लिए तरह-तरह के काम किये।

MEAT

इयोवा में अध्यापकों तथा छात्रों के बीच जयप्रकाश बड़े लोकप्रिय हो गये। सभी प्रेम से उन्हें जे.पी कह कर पुकारते।
जे.पी. सुना, शिकागो जा रहे हो?
जी हाँ, सर!

शिकागो से वे मैडिसन गये। वहाँ पोलैंड निवासी एक यहूदी, ऐब्रम लैंडी से भेंट हुई। उसके प्रभाव से जे.पी मार्क्सवादी बन गये।
DAS CAPITAL
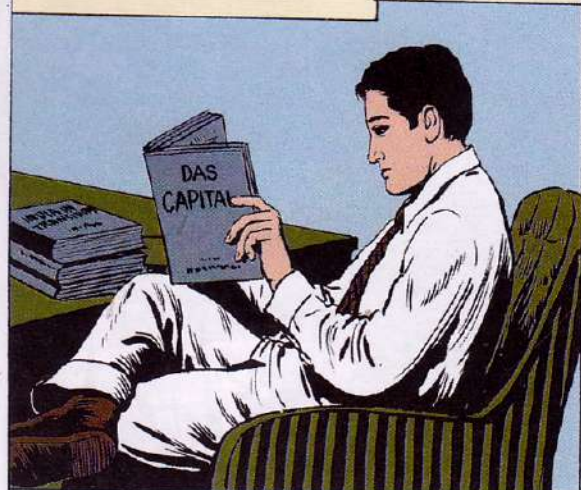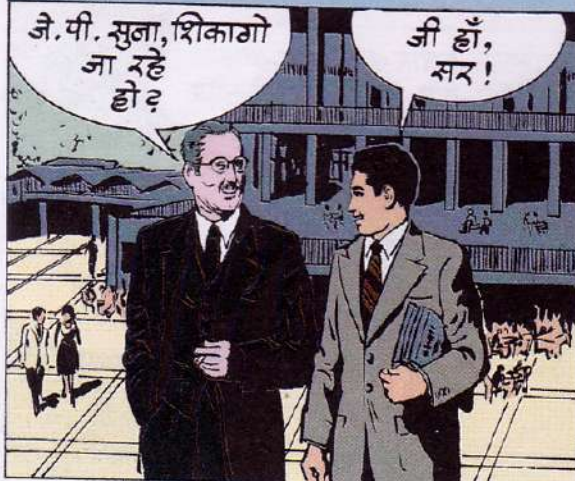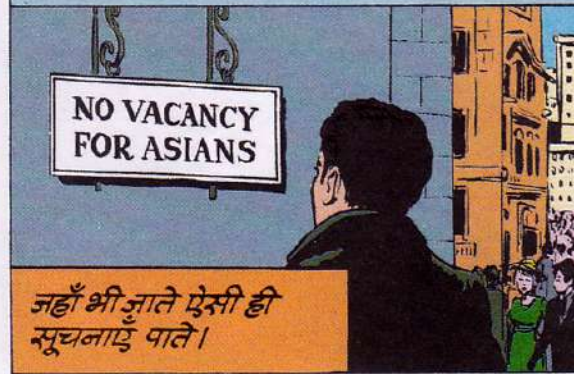
जयप्रकाश ने रूस जाने का विचार त्याग दिया। ओहियो विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में बी.ए. किया। और एम.ए. की पढ़ाई करने के साथ-साथ वहीं सहायक प्राध्यापक बनकर पढ़ाने लगे।

एम.ए.की थीसिस-'सोशल वैरीएशन्स'– वर्ष की सर्वश्रेष्ठ थीसिस घोषित की गयी। पी.एच.डी. की तैयारी करने लगे कि घर से पत्र मिला।
मेरी माँ बीमार है। मुझे जाना ही होगा।

सात साल विदेश में रहकर २३ नवंबर, १९२९ को २७ वर्ष की आयु में जे.पी. स्वदेश वापस आ गये।
मेरी माँ! कैसी हो तुम?
मुझे कुछ हुआ थोड़े ही था। तुझे देखे बिना जीना दूभर हो गया था, बस।
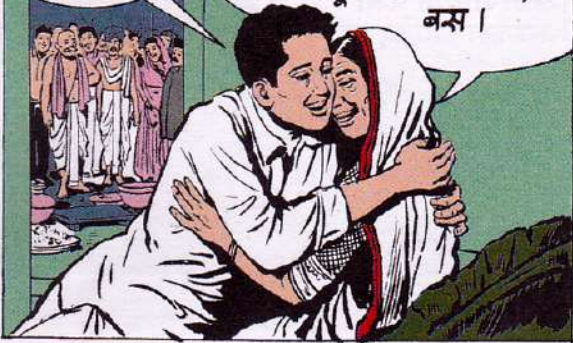
परिवारवालों से मिलकर जे.पी. सबसे पहले अपनी पत्नी प्रभावती से मिलने गये। वे श्रीनगर में अपने पिता के पास थीं।
अच्छा हुआ आप आ गये। इस समय देश को निष्ठावान कार्य-कर्ताओं की जरूरत है।
हाँ, प्रभा, वहाँ भी मुझे हर पल देश की ही चिंता रहती थी।
सात वर्ष जे.पी अमरीका में रहे। इधर स्वदेश में स्वतंत्रता-आंदोलन गांधीजी के नेतृत्व में बराबर जोर पकड़ता रहा।
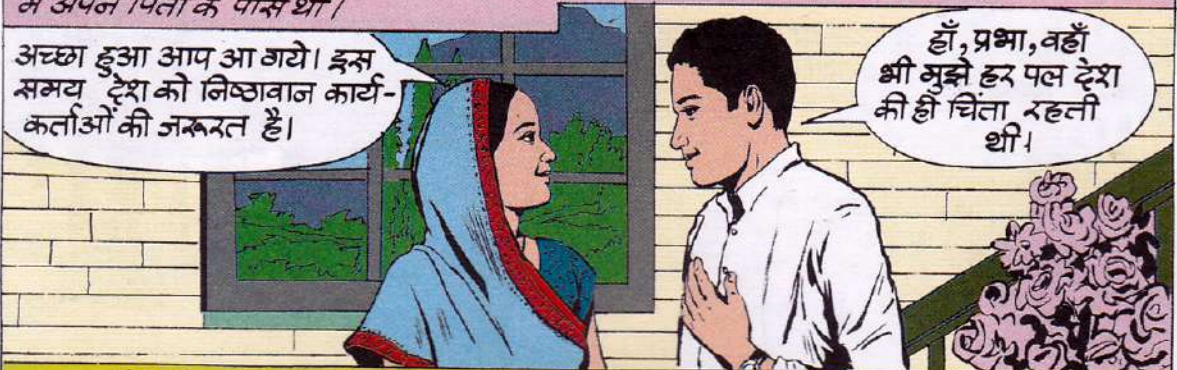
२९ दिसंबर, १९२९ को जे.पी. प्रभाजी के साथ बापू से मिलने वर्धा गये। वहाँ जवाहरलाल नेहरू से भेंट हुई।
मैं जवाहरलाल हूँ। तुम प्रभा के पति जयप्रकाश हो न?
जी! बड़े भाग्य कि आपके दर्शन हुए।

आगे क्या इरादा है?
कहीं समाजशास्त्र पढ़ाना चाहता हूँ।

छोड़ो यह चक्कर ! इलाहाबाद चल कर काँग्रेस का श्रमिक - शोध - विभाग सँभालो ।

प्रस्ताव स्वीकार कर १९३० के प्रारंभ में जे. पी. प्रभाजी के साथ इलाहाबाद आ गये।
काँग्रेस के महामंत्री की जगह खाली हुई है। इस पद पर काम करोगे?
जैसी आज्ञा, भाई।

प्रभावती और कमला नेहरू में बड़ा स्नेह हो गया था। जे. पी. घर और दफ्तर, दोनों जगह पूर्ण संतुष्ट और प्रसन्न थे। एक दिन—
प्रभा, माँ सख्त बीमार हैं। बचेंगी नहीं।
चलिए, हमें तुरंत पहुँचना चाहिए।

अप्रैल १९३० में गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ दिया था। सारे देश में हलचल मची थी।
GANDHI AND NEHRU ARRESTED

लेकिन माँ की बीमारी के कारण जयप्रकाश को गाँव में रुकना पड़ रहा था।
इलाहाबाद मत जाना, बेटा, वे तुम्हें भी गिरफ्तार कर लेंगे। तुम्हारे बिना मैं जीवित नहीं रह सकती।
माता की ममता और मातृभूमि के प्रति कर्तव्य! किसे अपनाऊँ किसे छोड़ूँ?

अंग्रेज सरकार और काँग्रेस के बीच समझौता हो चुका था। सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लिया गया था। जवाहरलाल जेल से छोड़ दिये गये थे।

एक वर्ष बाद, काँग्रेस ने आंदोलन फिर शुरू कर दिया। जवाहरलाल नेहरू को काँग्रेस वर्किंग कमेटी की एक खास मीटिंग में भाग लेने के लिए बम्बई जाना था।

जैसा कि शक था, नेहरू जी गिरफ्तार कर लिये गये। उधर, जयप्रकाश वेष बदल कर बम्बई के लिए चल पड़े।

पुलिस को फाँसा देते हुए, वे सीधे ताजमहल होटल में काँग्रेस की स्थानापन्न अध्यक्षा सरोजिनी नायडू के पास कागज देने जा पहुँचे।

सारे देश के बड़े नेता गिरफ्तार हो चुके थे। जे.पी. ने भूमिगत रहकर बम्बई में बहुत ठोस काम किये। सारे देश में बुलेटिन और सर्कुलर भेज कर काँग्रेस को सँभाले रहे। पर अंतत: ७ सितंबर, १९३२ को पकड़े गये।

नासिक जेल में इनकी भेंट अशोक मेहता, मीनू मसानी, अच्युत पटवर्धन, एन.जी. गोरे आदि से हुई। छूटने पर उन्होंने काँग्रेस पार्टी के अंतर्गत ही अपनी अलग सोशलिस्ट काँग्रेस बनायी।

१९३७ में स्वायत्त प्रान्तीय विधान सभाओं के लिए चुनाव हुए। किंतु जे.पी. संतुष्ट नहीं थे।

१९३९ में द्वितीय महायुद्ध शुरू होने पर जे.पी. ने युद्ध का सामान बनाने वाले कारखाने के मजदूरों की हड़ताल करा दी।

युद्ध-विरोधी कार्यों के कारण जे.पी. गिरफ्तार हुए। उन्होंने अदालत में खुद अपनी पैरवी की।

गांधीजी ने अपने पत्र 'हरिजन' में इस गिरफ्तारी की जबर्दस्त आलोचना की। उन्होंने लिखा —

श्री. जयप्रकाश ने अपने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया है.... उनमें कष्ट झेल लेने की अद्भुत क्षमता है। मेरे विचार से यह गिरफ्तारी एक साजिश है...

जयप्रकाश को सजा हुई। हजारीबाग जेल में उन्होंने सुना, काँग्रेस ने युद्ध में सहयोग देना इस ख्याल से स्वीकार कर लिया है कि बदले में उन्हें देश में राष्ट्रीय सरकार बनाने का मौका मिलेगा।

जेल से रिहा होने पर वे बम्बई पहुँचे ताकि भूमिगत कार्य कर सकें, पर वहाँ पहुँचते ही फिर गिरफ्तार कर के राजपूताना* के देवली कैंप जेल में डाल दिये गये।

एक दिन, प्रभावती जेल में मिलने आयीं...

जयप्रकाश को जेल सुपरिटेंडेंट के पास ले जाया गया।

दूसरे दिन, सरकारी विज्ञप्ति छपवा कर अखबारों के जरिए सारे देश में खबर फैलायी गयी।

*आधुनिक राजस्थान

बाद में, जे.पी को हज़ारीबाग जेल भेज दिया गया। नये आये कैदियों से बाहर के समाचार मिलते रहते।

सारे देश में दमन चक्र चल रहा है, गाँव के गाँव जलाये जा रहे हैं। औरतों की इज्जत खतरे में है।

जे.पी. परेशान हुए।
हम यहाँ क्यों हैं? दोस्तो, हमें बाहर निकल कर क्रांति का काम करना होगा।

जे.पी. ने जेल से भागने की योजना बनायी। ९ नवंबर, १९४२ की रात, कैदी दिवाली मना रहे थे....

जे.पी. पाँच साथियों के साथ एक अंधेरे कोने में मौके की तलाश में थे।
संतरी!

संतरी के दूसरी ओर जाते ही वे काम में जुट गये—

जल्दी करो।

आखिर भेष बदल कर वे बनारस पहुँचे। वहाँ से सारे देश के स्वतंत्रता-सेनानियों के नाम योजनाएँ और संदेश भेजे।

एक संदेश अमरीकी फौज के नाम भी भेजा गया।

सारे देश में, जे.पी. के जेल से भाग निकलने की चर्चा बड़े गर्व से होने लगी।

जे.पी. को पकड़वाने पर २१ हजार रुपये का इनाम घोषित किया है।

मूर्ख हैं, जे. पी. को कोई नहीं पकड़वायेगा।
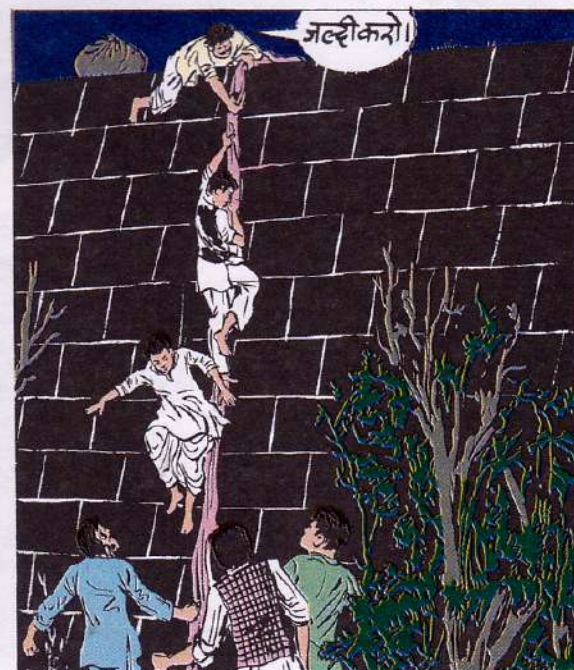
जे.पी. और लोहिया ने नेपाल भागने की कोशिश की। लेकिन सीमा पार करते ही नेपाली पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

हनुमाननगर पुलिस चौकी को जे.पी. के अनुयायी 'आजाद दस्ता' के सैनिकों ने घेर लिया।

उधर गोली चल रही थी, इधर दोनों भाग निकले।

भारत पहुँच कर वे फिर क्रांति के काम में जुट गये। १८ सितंबर, १९४३ को अमृतसर से लाहौर आते समय मुगलपुरा स्टेशनपर —

जे.पी. को लाहौर जेल में डाल कर, निर्मम यातनाएँ देकर प्रश्न पूछे गये।

जे. पी. सारे देश में लोकप्रिय हो गये थे। एक बहुत बड़ी सभा में जयप्रकाश के अभिनंदन में हिंदी के महान कवि दिनकर ने एक लम्बी कविता सुनायी।

गांधीजी जयप्रकाश की पीड़ा को समझते थे।
प्रभा, इस समय तुम्हें जयप्रकाश के साथ होना चाहिए। तुम वहाँ जाओ।
हाँ बापू, मैं जाऊँगी।

फिर जे.पी. ने अपने मित्रों के साथ काँग्रेस से अलग हो कर सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की।
... अब स्वतंत्र भारत में हमें समझना होगा, कि काँग्रेस - विरोध का मतलब देशद्रोह नहीं है। हम तो सरकार की कुछ नीतियों के विरोधी हैं....

जे. पी. दूने जोश से काम में लग गये। २५ नवंबर १९४९ को उन्होंने पटना में अभूतपूर्व किसानों के जुलूस का आयोजन किया।
किसानों का नेता SS
जयप्रकाश जिंदाबाद!

१९५२ के आमचुनाव में सोशलिस्ट पार्टी की करारी हार हुई। बिहार में पार्टी की मीटिंग हुई—
जे.पी. ने गुपचुप काँग्रेस की मदद की है।
हाँ, नेहरू से दोस्ती निभायी है।
पार्टी की हार के जिम्मेदार जे. पी हैं।

जिस पार्टी के लिए जी जान लगा दिया, उसी के साथियों से ये आरोप सुन कर जे. पी. का दिल टूट गया। वे रो पड़े।

SOCIALIST PARTY

कुछ समय बाद, उनका ध्यान विनोबा भावे के भूदान आंदोलन की ओर आकर्षित हुआ। इस आंदोलन का उद्देश्य भूमिहीनों को जमीन दिलाना और गावोंको स्वावलंबी बनाना था।

जे. पी. ने डाक और तार विभाग के कर्मचारियों को कुछ आश्वासन दिये थे; जिन्हें सरकार ने पूरा नहीं किया। पश्चात्ताप स्वरूप जे.पी. ने उसी वर्ष जून में २१ दिन का उपवास किया।
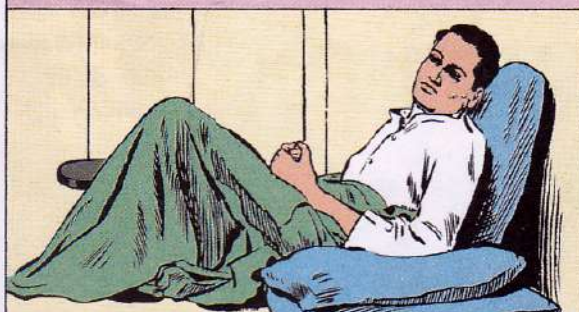
बाद में वे भूदान के काम में लग गये। भूमिहीनों को कुछ भूमि दान देने के लिए वे भू-स्वामियों को प्रेरणा देते।

एक सप्ताह में, जे. पी. ने लगभग सात हजार एकड़ भूमि भूमिहीनों के लिए प्राप्त कर ली।

अप्रैल १९५४ में बोधगया के सर्वोदय कार्यकर्ता सम्मेलन में जे.पी. ने घोषित किया —

उनकी देखा-देखी करीब छह सौ लोगों ने भी जीवनदान दिया। फिर जे.पी. बिहार के एक पिछड़े गाँव सेखोदेवरा में रहने लगे। उनके प्रयासों से देखते-देखते गाँव में खुशहाली आने लगी।

भूदान आंदोलन जितनी तेजी से उभरा था, उतनी ही तेजी से मंद भी पड़ने लगा।

उन्हीं दिनों, मई १९७० में उन्हें मुजफ्फर पुर से एक पत्र मिला —

हमारे पास ज़मीन कहाँ? बड़े ज़मींदारों ने सारी सरकारी ज़मीन पर कब्ज़ा कर रखा है।

हमें मारा-पीटा, और हमारे घर जला दिये। हमारा कसूर यही है कि हम अछूत हैं।

मुझे निश्चित दर से भी कम मज़ूरी मिली। फरियाद करने पर मुझे और मेरे परिवार को मारा-पीटा...

कचहरी जाऊँ? अरे, बाबूजी, कोर्ट-कचहरी के लिए पैसा कहाँ से लाऊँगा?

मैंने जब जोताई-बुआई की अपनी हिस्सेदारी का कानूनी हक माँगा तो मुझे गाँव से ही निकाल दिया। अब रहने को घर नहीं है।

सरकार को कुछ पता नहीं। सामाजिक परिवर्तन के लिए लोगों को सीधे सचेत करना होगा। ज़रूरत पड़ी तो गांधीजी के दिखाये रास्ते पर चल कर सरकार से अहिंसक असहयोग आंदोलन छेड़ना होगा।
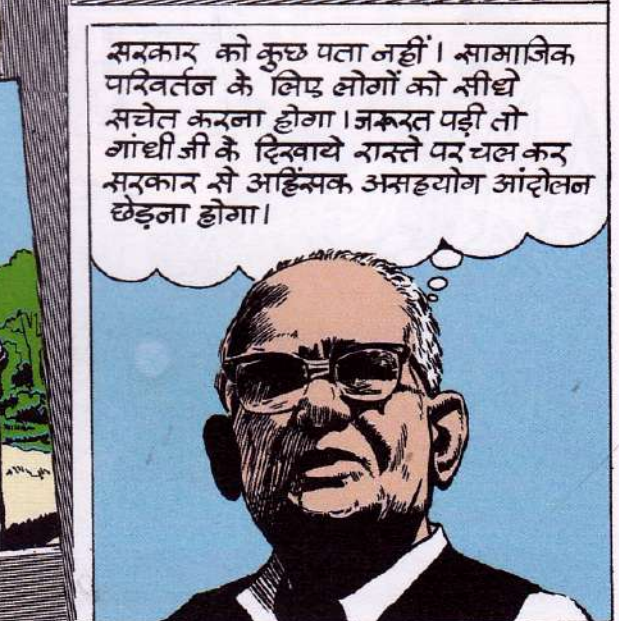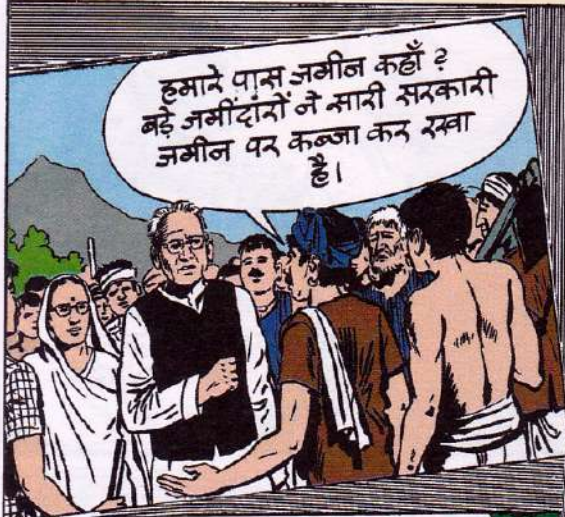
नक्सलवादी समस्याओं और नागा-समस्या आदि को जे.पी. सर्वोदयी तरीकों से सुलझाने में व्यस्त हो गये। लेकिन १९७१ में पटना में जो घटना हुई, उससे सारा संसार आश्चर्य चकित रह गया।
एक दिन —
मेरा नाम रामसिंह है। मैं चम्बल घाटी में जंगलों का ठेकेदार हूँ।

मुझसे कुछ काम है?
बागियों का संदेश लाया हूँ। चम्बल के डाकू आपके समक्ष आत्मसमर्पण करना चाहते हैं।

भाई, इसके लिए तो तुम विनोबाजी के पास जाओ। वे ही मेरे गुरु हैं।
डाकुओं को भी विनोबाजी के प्रति अपार श्रद्धा है पर वे हथियार आपके ही चरणों में डालना चाहते हैं।

डाकुओं से खासी पहचान लगती है तुम्हारी।

पहचान? बाबूजी, मैं ही डाकू माधोसिंह हूँ।
माधोसिंह चंबल घाटी का सबसे खूंख्वार डाकू था। उसके सिर पर डेढ़ लाख का इनाम घोषित था।

बाबूजी, सरकार के साथ आप हमारे मध्यस्थ बनेंगे तो डाकू समस्या का अंत हो जायेगा।

माधोसिंह, तुमने तो धर्मसंकट में डाल दिया।
बाबूजी, हमारी आशाएँ आप पर ही टिकी हैं।

जे. पी. सोच में पड़ गये।
तुम्हारी शर्तें क्या हैं?
चाहे जो सजा दीजिए, बस फाँसी न लगे।

इतने में दरवाजे पर दस्तक हुई –
प्रभा, देखो कौन है किंतु किसी को अंदर मत आने देना।

जे. पी. को फुर्सत हो तो, कुछ विदेशी उनसे मिलना चाहते हैं।
भइया, आज तो उनकी तबियत ठीक नहीं है। उनसे कल आने को कहो।

भारत सरकार लाखों प्रयत्न कर के भी जो न कर पायी, वह काम जे. पी. के सर्वोदयी व्यक्तित्व ने कर दिखाया। सैकड़ों डाकुओं ने १४ अप्रैल १९७२ को आत्मसमर्पण कर दिया।
हमने लोगों को बड़े दुःख दिये हैं। अब हम अपना जीवन मानवता की सेवा में अर्पित करने की शपथ लेते हैं....

अप्रैल १९७३ में प्रभावती जी का देहांत होगया। जे.पी. पर वज्रपात हुआ। लेकिन उन्होंने भ्रष्टाचार दूर करने का अपना काम चालू रखा। अगले वर्ष वाराणसी में छात्रों की एक सभा में —

INDEPENDENT STUDENTS CONFERENCE FEDERATION

धन, झूठ और भ्रष्टाचार के बल पर लड़े जाने वाले चुनाओं का कोई मूल्य नहीं है। प्रजातंत्र की रक्षा के लिए युवकों को आगे आना चाहिए।

उनके भाषण की सबसे तीव्र प्रतिक्रिया हुई गुजरात में। वहाँ छात्रों ने हड़ताल कर के...

कीमतें घटाओ या गद्दी छोड़ो।

मैस के बिल घटाओ।

मैस के बिल घटाओ।

...विधान सभा ही भंग करा दी।

बिहार में छात्रों की विशाल सभाएँ हुईं। उन्होंने सरकार से भ्रष्टाचार दूर कराने, कीमतें कम करने, रोजगार देने और शिक्षा-नीति बदलने की जोरदार माँग की। पुलिस ने उन्हें कुचलना चाहा।

मार्गदर्शन के लिए वे जे.पी. के पास आये। बीमारी के बावजूद जे.पी ने ध्यानपूर्वक सुना और बोले —

मेरी दो शर्तें हैं। एक तो यह कि आप उत्तेजित किये जाने पर भी हिंसा का मार्ग नहीं अपनायेंगे। दूसरी बात कि आप किसी भी पार्टी के हों, लेकिन एक जुट हो कर काम करेंगे।

उस दिन से उस सत्तर वर्षीय वृद्ध नेता और युवकों के बीच अद्भुत तालमेल शुरू हो गया।

बिहार विधान सभा भंग करने की जे. पी. की माँग से बौखलाकर बिहार सरकार ने आंदोलन को पूरी ताकत से कुचला। १८ मार्च १९७४ को गया में आठ व्यक्ति पुलिस की गोली के शिकार हुए।
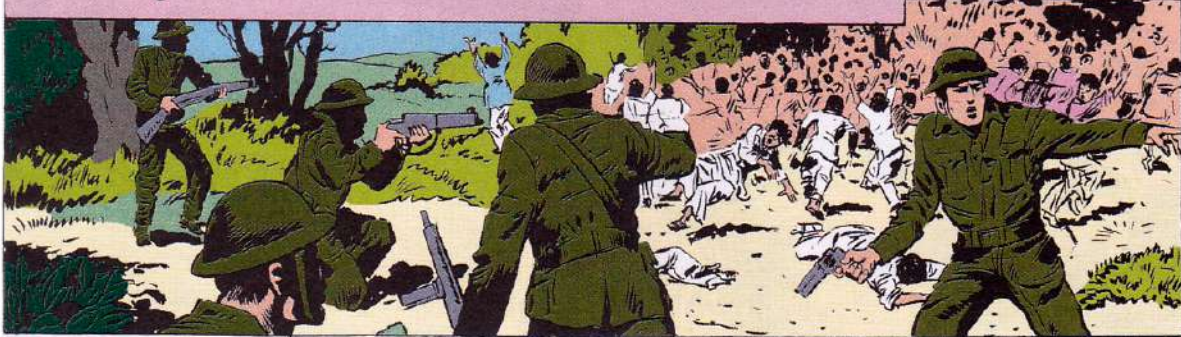
८ अप्रैल १९७४ को जे.पी. ने एक मील लम्बे मौन जुलूस का नेतृत्व किया।

५ जून को पटना में जयप्रकाश ने गांधी मैदान से सम्पूर्ण क्रांति का नारा बुलंद किया।
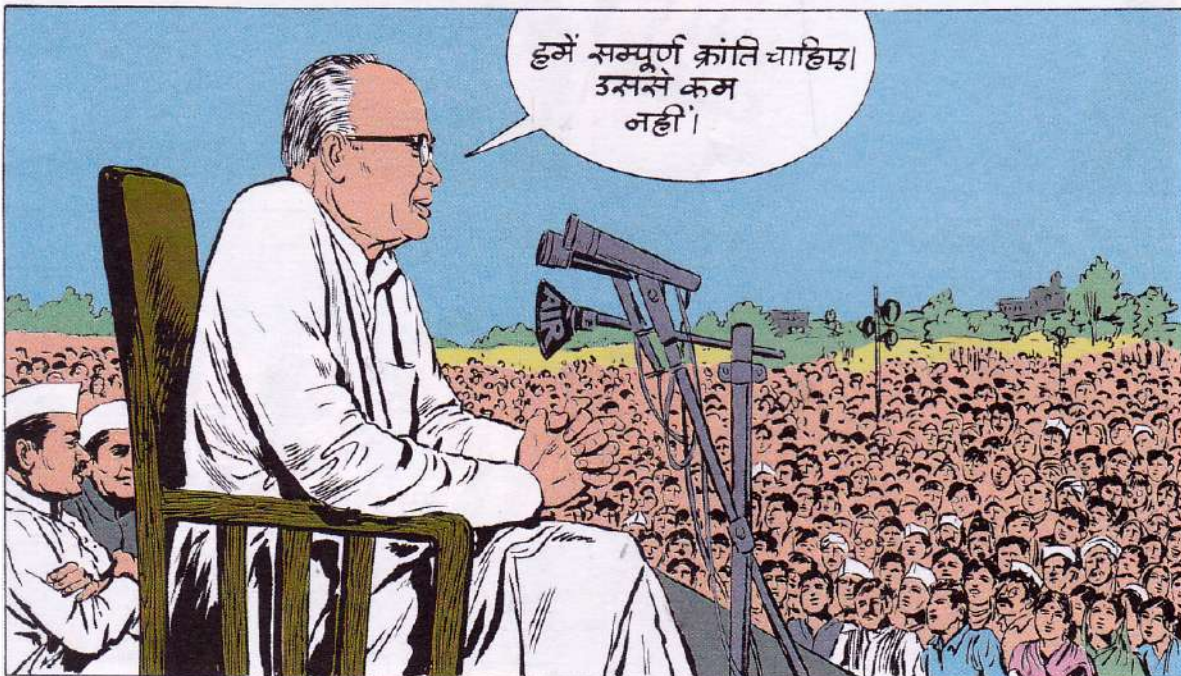
फिर, ४ नवंबर, १९७४ को पटना में विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों को पीटा। वृद्ध जयप्रकाश तक को पुलिस की लाठियों का निशाना बनाया गया।

फिर तो देश में घटनाचक्र तेजी से घूम गया। २६ जून १९७५ को —

THE TIMES OF INDIA

STATE OF EMERGENCY DECLARED

Several leaders arrested

Security in peril, says P.M.

Rights suspended

Situation peaceful

blames opposition

आपात स्थिति घोषित। रातोंरात देश के सैकड़ों विरोधी नेता गिरफ्तार कर लिये गये।

प्रेस पर सैंसर लगा दिया गया। विरोध स्वरूप इंडियन एक्सप्रेस ने संपादकीय कालम लेख से रिक्त छापा।

THE INDIAN EXPRESS

Blocked option

What price costly dams?

Property of Goan smugglers attached
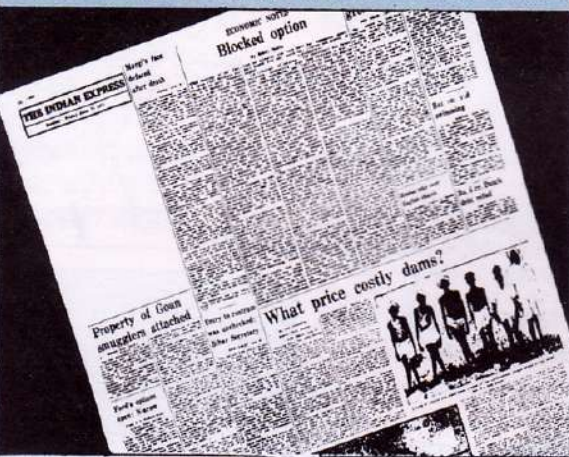
जे.पी. जेल में सख्त बीमार हो गये। १२ नवंबर १९७५ को वे पैरोल पर रिहा होकर बम्बई के जसलोक अस्पताल में भर्ती हुए।
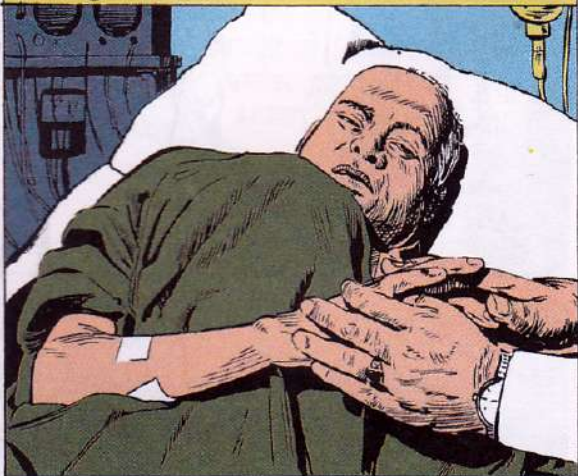
जे.पी. की बीमारी की खबर से सारे देश में चिंता की लहर दौड़ गयी।

एक महीने बाद तबियत जरा सँभलने पर उन्होंने अस्पताल से एक पत्र लिखा —

मैं शर्मिंदा हूँ कि आप सब कैद में हैं, और मैं आजाद हूँ। यह परिस्थिति मेरी बीमारी ने पैदा की है। बीमारी में कैद से भी ज्यादा बेबसी है इतना ही लिख कर संतोष करूँगा कि हज़ारों लाखों की कुर्बानियाँ व्यर्थ नहीं जायेंगी। भारत का लोकतंत्र मौजूदा चुनौतियों का सफल मुकाबला करता हुआ अपनी वर्तमान अग्निपरीक्षा से निकलकर तपे हुए सोने की तरह निखर आयेगा।

जसलोक १२-११-७५

आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ
— जयप्रकाश

१८ जनवरी १९७७ को सरकार द्वारा आम चुनावों का ऐलान हुआ और जेलों से विरोधी नेता छोड़ दिये गये। अनेक विरोधी दल आपसी विरोध भूल कर जे. पी. की छत्र-छाया में देश-कल्याण के लिए एक जुट हो गये।

मार्च १९७७ में चुनावों में सत्ताधारी कॉंग्रेस पार्टी की करारी हार हुई। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने २४ मार्च, १९७७ को दिल्ली में गांधी जी की समाधि पर जनता पार्टी के नवनिर्वाचित संसद सदस्यों को शपथ दिलायी। और उनसे राष्ट्रपिता गांधी जी के अपूर्ण कार्य को पूरा करने की अपील की।

लोकतंत्र की मशाल को पुनः प्रज्वलित कर गीता के निष्काम योगी की तरह लोकनायक बाकी का सारा जीवन सत्ता की राजनीति से दूर रहकर सम्पूर्ण क्रांति की ज्योति जगाये रखने का काम करते रहे।

दिव्यदृष्टा

जयप्रकाश नारायण

डाकुओं और बैलों दोनों ने निष्पक्ष खेल की अपनी भावना पर भरोसा किया। जब, लड़के के रूप में, वह अपने खिलौनों के साथ खेलने के बजाय पालतू जानवरों की ओर जाता था, तो लोगों को लगता था कि वह सरल स्वभाव वाला है। हालांकि, यह दया की भावना थी, जिसने अन्याय और असमानता के खिलाफ अपनी आजीवन लड़ाई को निर्देशित किया। राजनैतिक जीवन की खुरदुराहट और खलबली ने शायद उन्हें विस्मित कर दिया, लेकिन देश ने जयप्रकाश नारायण को एक ईमानदार, प्रतिभाशाली और निस्वार्थ गांधीवादी के रूप में मान्यता दी।

अमर चित्र कथा के अन्य दिव्यदृष्टा :
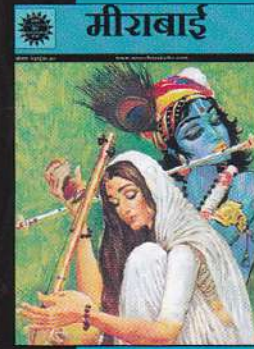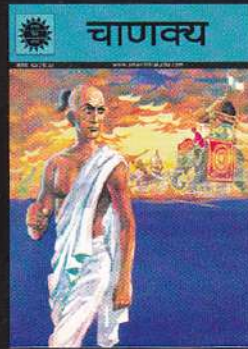
ये भी पढ़ें :
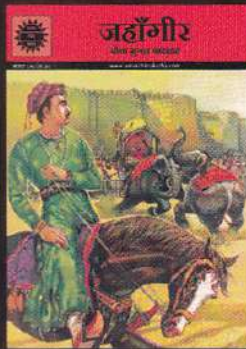
वीरांगना
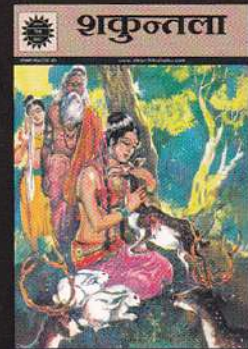
भारतीय उत्कृष्ट साहित्य

हास-परिहास और दंतकथाएँ

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ

www.amarchitrakatha.com ऑनलाइन पर खरीदें

ISBN 978-93-90055-59-3